

सुख देवी मैया हमारी बलहारी हूं बलहारी।
जग उज्यारा जगत में आया तेरा सुवन कहावे
आनंद उमंग भरियो है चहूं दिशि फूली है फुलवारी॥

कैसी चान्दनी चमक रही है दमक रही है दामिनि
मिलि आई है सभु गज गामिनि हाथ में मंगल थारी॥

जै जै मंगल वाधाई है नभ धरणी में छांई
फूल वर्षा कर सुर मुनि कहते धनु बालक महतारी॥

निरिख निरिख शशि वदन ललन को नैन पुनीत भए हैं
रोम रोम खिलि उठा सबन का जीए सुवन सुखकारी॥

आज आत्माराम स्वामी भए हैं आत्मारामी
संत शिरोमणि साई साहिब बालक छबि है धारी॥

गद् गद् बाबा रोचल प्यारे फूले नहीं समाते
तीन लोक का राजा मिला है सन्त सुवन सुकुमारी॥

कोमल कमल समान किशोरा नैन विशाल हैं जांके
अंग अंग से अमृत टपके हृदय हर्ष अपारी॥

गोद लिए सुकुमार सलोने मैया दूध पिलावे
किलक किलक के हाथ चलावै मधुर मधुर सिसकारी॥

कबहूँ पलका पोढे जननी लालन उर लपटाए
कबहूँ झुलावत पलना ललना गावत मोद मंझारी॥

जननी उर आनंद उधदि से साईं सुधाकर आया
भक्ति सुधा वर्षे निश वासर त्रपति भई नर नारी॥

श्री रघुनाथ कृपा का बादल मीरपुर भूमी वर्षा
रसिक जननि उर गीत हरे भए निरखत चढ़ी खुमारी॥